साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

Email- thekaarmiicpost@gmail.com

वर्ष : 11, अंक : 12 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 22 अक्टूबर 2025 से 28 अक्टूबर 2025 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

जलवायु परिवर्तन को लेकर सोच को बदलते हैं हमारे व्यक्तिगत अनुभव

नई दिल्ली। आज दुनिया भर में बाढ़, सूखा, लू या हीटवेव और जंगलों में आग जैसी प्राकृतिक आपदाएं बढ़ती जा रही हैं। वैज्ञानिक इसे जलवायु परिवर्तन का परिणाम मानते हैं। लेकिन क्या आम लोग भी इसे उतनी ही गंभीरता से लेते हैं? हाल ही में एम्स्टर्डम विश्वविद्यालय के एक शोध में यह जानने की कोशिश की गई कि क्या जो लोग इन आपदाओं को खुद झेलते हैं, वे जलवायु परिवर्तन को लेकर ज्यादा चिंतित होते हैं।

शोध में कहा गया है कि शोधकर्ताओं ने 142 देशों के 1.28 लाख से ज्यादा लोगों से बातचीत की। यह आंकड़े 2023 में लॉयड्स रजिस्टर फाउंडेशन और गैलप द्वारा किए गए विश्व जोखिम सर्वेक्षण से लिए गए हैं। एनवायर्नमेंटल रिसर्च लेटर्स में प्रकाशित शोध का मुख्य सवाल था क्या जलवायु आपदाओं का व्यक्तिगत अनुभव किसी व्यक्ति की जलवायु परिवर्तन को लेकर धारणा को बदलता है? जिन लोगों ने पिछले पांच सालों में बाढ़, हीटवेव या सूखा जैसी घटनाओं का अनुभव किया, वे जलवायु परिवर्तन को बहुत गंभीर खतरा मानते हैं। यह फर्क उन्हीं देशों में देखा गया जहां कुछ लोगों ने आपदा झेली थी और कुछ ने नहीं। यानी, एक ही देश में, जिन्होंने आपदा झेली, वे दूसरों की तुलना में अधिक चिंतित थे। शोधकर्ताओं ने 142 देशों के 1.28 लाख से ज्यादा लोगों से जलवायु परिवर्तन को लेकर बातचीत की। अध्ययन में पाया गया कि हीटवेव का अनुभव लोगों के सोचने के तरीके को बदलने में उच्च शिक्षा

जितना प्रभावशाली था। शिक्षा को अब तक जलवायु चेतना का सबसे मजबूत कारक माना जाता रहा है। लेकिन हीटवेव का अनुभव भी लोगों को उतनी ही गंभीरता से सोचने पर मजबूर करता है। हालांकि व्यक्तिगत अनुभव लोगों की सोच को बदलते हैं, पर इसका मतलब यह नहीं कि जिन देशों में ज्यादा आपदाएं आती हैं, वहाँ लोग ज्यादा चिंतित हैं। उदाहरण के लिए बाढ़ दुनिया की सबसे आम आपदा है, लेकिन कई ऐसे देश हैं जहां अक्सर बाढ़ आती है, फिर भी वहां के लोग जलवायु परिवर्तन को बहुत गंभीर खतरा नहीं मानते। इससे साफ है कि राजनीति, मीडिया और सांस्कृतिक सोच यह तय करने में बड़ी भूमिका निभाते हैं कि लोग अपने अनुभवों को कैसे समझते हैं। शोधकर्ताओं ने 142 देशों के 1.28 लाख से ज्यादा लोगों से जलवायु परिवर्तन को लेकर बातचीत की। शोध पत्र में शोधकर्ताओं के हवाले से कहा गया है कि जब कोई व्यक्ति खुद किसी बाढ़ या हीटवेव से गुजरता है, तो जलवायु परिवर्तन उसके लिए एक निजी और वास्तविक खतरा बन जाता है। यह अनुभव एक मनोवैज्ञानिक द्वार की तरह काम करता है, जो जलवायु परिवर्तन को सिर्फ एक वैज्ञानिक या राजनीतिक मुद्दा नहीं रहने देता, बल्कि उसे व्यक्तिगत समस्या बना देता है। हालांकि आपदाएं लोगों की सोच बदल सकती हैं, लेकिन यह बदलाव राष्ट्रीय स्तर पर नीति या सामूहिक कार्रवाई में तब्दील नहीं होता, जब तक कि मीडिया सही जानकारी न दे, नेता जनता को जागरूक न करें और सांस्कृतिक रूप से इसकी गंभीरता को समझा न जाए। यह अध्ययन अब तक का सबसे बड़ा वैश्विक अध्ययन है, जो यह दिखाता है कि लोग जलवायु परिवर्तन को कैसे समझते हैं। इससे नीति-निर्माताओं को यह समझने में मदद मिलेगी कि केवल आपदाएं आने से लोग जागरूक नहीं हो जाते, बल्कि उन्हें समझाने और जोड़ने की भी जरूरत है। इस शोध से हमें यह सिखने को मिलता है कि जलवायु परिवर्तन की गंभीरता को समझाने के लिए आंकड़ों से ज्यादा प्रभावशाली होता है व्यक्तिगत अनुभव। लेकिन यह अनुभव तब ही सामाजिक परिवर्तन में बदलता है जब राजनीतिक नेतृत्व, मीडिया और शिक्षा मिलकर लोगों को सच से जोड़ें। जलवायु परिवर्तन कोई दूर की बात नहीं है। यह हमारे आस-पास और हमारे जीवन में हो रहा बदलाव है।

संभागायुक्त डॉ. सुदाम खाड़े ने महेश्वर में मां नर्मदा का पूजन-अर्चन किया

सिंहस्थ तैयारी एवं अहिल्या लोक के कार्यों का किया अवलोकन

इंदौर संभागायुक्त डॉ. सुदाम खाड़े ने महेश्वर प्रवास के दौरान नर्मदा रिट्रीट पर्यटन होटल के नीचे घाट पर मां नर्मदा का पूजन-अर्चन किया। इसके पश्चात उन्होंने नाव के माध्यम से सिंहस्थ-2028 की तैयारियों को लेकर प्रस्तावित निर्माण कार्यों की जानकारी ली तथा प्राचीन मंदिरों व ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण एवं संवर्धन पर अधिकारियों से चर्चा की।

संभागायुक्त डॉ. खाड़े ने नर्मदा तट स्थित प्राचीन ज्वालेश्वर मंदिर में दर्शन-पूजन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस दौरान कलेक्टर खरगोन सुश्री भव्या मित्तल ने महेश्वर में चल रहे अहिल्या लोक निर्माण कार्यों की जानकारी संभागायुक्त को दी। इस दौरान उन्होंने नगर से लगभग 6 किलोमीटर दूर स्थित सहस्त्रधारा पर्यटन स्थल का भी अवलोकन किया एवं श्री दत्त मंदिर में दर्शन किए। इस अवसर पर जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री आकाश सिंह, एसडीएम सुश्री पूर्वा मण्डलोई सहित अन्य आधिकारी उपस्थित थे।

ओरछा में हो रहा दिव्य और भव्य श्रीराम राजा लोक का निर्माण- मुख्यमंत्री डॉ. यादव

ओरछा में हो रहे हैं 239 करोड़ रूपए से अधिक लागत के कई निर्माण कार्य

भगवान श्रीराम दिन ओरछा में बिताते हैं, केवल शयन के लिए जाते हैं अयोध्या

प्रदेश में ओरछा सहित हो रहा 18 लोकों का निर्माण

निवाड़ी प्रदेश का दूसरा जिला, जहां हर घर नल से पहुंच रहा है जल

पृथ्वीपुर में 3200 करोड़ रूपए से 300 हेक्टेयर में हो रही इंटीग्रेटेड स्टील प्लांट की स्थापना

श्रीराम राजा लोक के निर्माण के दूसरे चरण के कार्यों का हुआ भूमिपूजन

मुख्यमंत्री ने 332.85 करोड़ के विकास कार्यों का किया भूमिपूजन एवं लोकार्पण

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि श्रीराम का नाम ही काफी है। यथा नाम तथा गुण। राम अपने गुणों से, अपने आचरण से, अपनी पितृभक्ति से और प्रजाजन का पालनहार बनकर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम बने। ओरछावासी बड़े ही भाग्यशाली हैं कि भगवान श्रीराम ने अपने दरबार के लिए ओरछा को चुना। ओरछा के लोगों को हर दिन अवधपति श्रीराम राजा सरकार के दरबार दर्शन का पुण्य मिलता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव बुधवार को निवाड़ी जिले के ओरछा में श्रीराम राजा लोक के दूसरे चरण के निर्माण कार्यों के भूमिपूजन सहित अन्य? विकास कार्यों के भूमिपूजन एवं लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पूर्ण विधि-विधान से पूजन-अर्चन कर श्रीराम राजा लोक में दूसरे चरण के निर्माण कार्यों का भूमिपूजन किया। इससे पहले मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ओरछा के प्रमुख मंदिर पहुंचकर श्रीराम राजा सरकार के दरबार में दर्शन कर पूजा-अर्चना की। मुख्यमंत्री ने श्रीराम राजा लोक के भव्य निर्माण के लिए पहले चरण में मंजूर एवं वर्तमान में निर्माणाधीन कार्यों का मौके पर जाकर अवलोकन भी किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि ओरछा के साथ चित्रकूट में भी करीब 2200 करोड़ रूपए के निर्माण कार्य चल रहे हैं। श्रीराम वन गमन पथ और श्रीकृष्ण के लीला स्थलों को तीर्थ क्षेत्र बनाया जाएगा। इसके लिए सरकार ने राशि मंजूर कर दी है। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने मध्यप्रदेश इलेक्ट्रानिक विकास निगम एवं एक एनजीओ के बीच करार की प्रक्रिया पूरी होने पर संस्था को लेटर ऑफ अवार्ड भी प्रदान किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने निवाड़ी शहर को %नगर पालिका परिषद% का दर्जा देने के लिए जल्द ही परीक्षण कराने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि ओरछा को धार्मिक पर्यटन सहित एयर एम्बुलेंस एवं हेलीकॉप्टर सेवाओं से भी जोड़ा जाएगा। इसके लिए एयर स्ट्रीप बनाई जाएगी। मुख्यमंत्री ने नेंदुआ के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का उन्नयन कर नया अस्पताल बनाने की घोषणा की। साथ ही क्षेत्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नए सड़क मार्गों के निर्माण की भी घोषणा की गई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अयोध्या और ओरछा का 500 साल से अधिक पुराना नाता है। ओरछा के बुंदेला शासक मधुकर शाह की महारानी कुंवरि गणेश जो भगवान श्रीराम की उपासक थीं, 16वीं शताब्दी में भगवान श्रीराम को अयोध्या से लेकर ओरछा आई थीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि ओरछा में जिस रूप में श्रीराम राजा पूजे जाते हैं, वैसे कहीं और नहीं पूजे जाते। उन्होंने ओरछा के विषय में बताया कि मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम अपना दिन ओरछा में ही बिताते हैं, केवल शयन करने के लिए ही अयोध्या जाते हैं। उन्होंने कहा?कि आज निवाड़ी जिले को 332.85 करोड़ रुपए की लागत के 21 से अधिक विकास कार्यों की सौगात मिली है। क्षेत्रवासियों को नया सांदीपनि विद्यालय और नया शासकीय महाविद्यालय भी आज मिला है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रभु श्रीराम की अनंत कृपा से हम ओरछा में एक दिव्य और भव्य श्रीराम राजा लोक का निर्माण कर रहे हैं। आज श्रीराम राजा लोक निर्माण के पहले चरण के 130 करोड़ रुपए की लागत वाले विभिन्न कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास भी हो रहा है। उन्होंने कहा कि आज ही श्रीराम राजा लोक के दूसरे चरण के लगभग 125 करोड़ रूपए की लागत वाले दूसरे चरण के निर्माण कार्यों की आधारशिला भी रखी जा रही है। साथ ही यहां के ऐतिहासिक स्मारकों के संरक्षण एवं पुरातात्विक परिसर का भूमिपूजन भी किया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा?कि श्रीराम राजा लोक के पहले चरण में लगभग 5.50 करोड़ रूपए की लागत से तैयार 103 नवीन दुकानों एवं प्लाज़ा का लोकार्पण भी आज ही किया जा रहा है। यह विकास कार्य ओरछा आने वाले देशी-विदेशी पर्यटकों की सुविधाओं में और अधिक इजाफा करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि ओरछा में श्रीराम राजा लोक के निर्माण के दोनों चरणों सहित सात विभिन्न प्रकार की विकास परियोजनाओं पर करीब 239 करोड़ रुपए से अधिक की लागत के कई निर्माण कार्य प्रगति पर हैं। यह सभी कार्य श्रीराम राजा सरकार के चरणों में अर्पित हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि निवाड़ी प्रदेश का दूसरा जिला जहां हर घर में नल से जल इंटीग्रेटेड स्टील प्लांट की स्थापना होगी। प्रदेश का दूसरा ऐसा जिला है, जहां हर घर में नल से जल पहुंच रहा है। निवाड़ी केन-बेतवा परियोजना से भी लाभान्वित होने जा रहा है। इससे संपूर्ण क्षेत्र को भरपूर लाभ मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि श्रीराम राजा लोक के निर्माण से ओरछा में धार्मिक एवं पर्यटन आधारित अर्थव्यवस्था का निर्माण होगा। क्षेत्र का विकास होगा, रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे। उन्होंने कहा कि लाड़पुरा खास एवं राधापुर ग्राम की महिलाओं द्वारा संचालित होम-स्टे मध्यप्रदेश में पहले एवं दूसरे स्थान पर रहे हैं। इस वर्ष चंदपुरा तथा जमुनियां खास में एक दर्जन नए होमस्टे प्रारंभ किए जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया?कि निवाड़ी औद्योगिक विकास में भी आगे आ रहा है। जिले के पृथ्वीपुर में पेसिफिक इंडस्ट्री मेटल लिमिटेड द्वारा 3200 करोड़ रूपए की लागत से करीब 300 हेक्टेयर भूमि में %इंटीग्रेटेड स्टील प्लांट% की स्थापना की जा रही है। इससे बड़ी संख्या में जिले के युवाओं को ही रोजगार मिलेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि ओरछा अब वैश्विक पर्यटन स्थल के रूप में नई पहचान बनाने की ओर अग्रसर है। पर्यटन मंत्रालय भारत सरकार द्वारा ओरछा में पर्यटन अधोसंरचनाओं और सुविधाओं के विकास के लिए स्वदेश दर्शन योजना 2.0 के तहत टूरिस्ट एक्सपीरियंस सेंटर, हुनरशाला, एंट्री प्लाजा के साथ यात्रा पथ का विकास किया जाएगा। उन्होंने बताया कि ओरछा को यूनेस्को की एच.यू.एल. (हिस्टोरिकल अर्बन लैंडस्केप) पहल के तहत चुना गया है। केंद्र सरकार ने यूनेस्को से वर्ष 2027-28 में ओरछा को विश्व धरोहर के रूप में मान्यता देने के लिए सिफारिश की है।

रेलवे को 50 साल तक नजरअंदाज किया गया-अश्विनी वैष्णव

वलसाड। केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सोमवार को कहा कि भारत में रेल व्यवस्था को करीब 50 से 60 वर्षों तक उपेक्षा झेलनी पड़ी, लेकिन अब रेलवे में ऐतिहासिक बदलाव हो रहा है। उन्होंने यह बात रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) के 41वें स्थापना दिवस पर वलसाड में आयोजित कार्यक्रम में कही। मंत्री ने कहा कि अब रेलवे में हर स्तर पर आधुनिक तकनीक और नई सुविधाएं जोड़ी जा रही हैं, चाहे वह ट्रैक बिछाने का काम हो, स्टेशन का नवीनीकरण हो या फिर सुरक्षा व्यवस्था। अश्विनी वैष्णव ने बताया कि पिछले 11 वर्षों में लगभग 35,000 किलोमीटर नए ट्रैक बिछाए गए हैं। उन्होंने कहा, 'इतना काम रेलवे के इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ। आज इसलिए ज्यादा ट्रेनें चल रही हैं और देश के कोने-कोने को रेल से जोड़ा जा रहा है।' उन्होंने कहा कि देश के 1,300 रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास किया जा रहा है। इनमें से 110 स्टेशनों पर काम पूरा हो चुका है और बाकी जगह तेजी से काम चल रहा है। रेल मंत्री के मुताबिक, अब तक लगभग 60,000 किलोमीटर रेलवे ट्रैक का विद्युतीकरण किया जा चुका है। उन्होंने कहा, 'दुनिया के विकसित देश भी इतने कम समय में ऐसा नहीं कर पाए हैं, जितना भारत ने कर दिखाया है।'

उन्होंने बताया कि नमो भारत सेवाओं के पहले दो चरणों से मिले अनुभव के आधार पर अब इस ट्रेन का बड़े पैमाने पर उत्पादन शुरू होगा। इसके अलावा मेनलाइन ईएमयू (ईएमयू) ट्रेनों को भी जोड़ा जा रहा है, जिनकी मांग काफी अधिक है। रेलवे ने अब तक करीब 3,500 सामान्य (जनरल) कोच ट्रेनों में जोड़े हैं और 7,000 नए कोचों का निर्माण जारी है। वैष्णव ने कहा कि रेलवे का लक्ष्य सभी वर्गों, खासकर गरीब और मध्यम वर्ग, को बेहतर और सस्ती यात्रा सुविधा देना है। रेल मंत्री ने बताया कि अब तक लगभग 1200 लोकोमोटिव इंजनों पर कवच (एटीपी सिस्टम) तकनीक लग चुकी है। यह स्वदेशी प्रणाली ट्रेन हादसों को रोकने के लिए खुद-ब-खुद ब्रेक लगाती है और सुरक्षा बढ़ाती है। अश्विनी वैष्णव ने कहा कि अब आरपीएफ में भर्ती हर 4-5 साल में एक बार नहीं, बल्कि हर साल होगी। पिछले साल 452 सब-इंस्पेक्टर भर्ती किए गए थे और इस साल 4,208 कांस्टेबलों की भर्ती प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। उन्होंने कहा, 'अगर भर्ती में कई साल का गैप हो, तो उम्मीदवारों के लिए मौके सीमित हो जाते हैं। इसलिए अब हर साल भर्ती होगी। एसएससी हर साल कांस्टेबल, सब-इंस्पेक्टर और इंस्पेक्टर की भर्ती करेगा।' आरपीएफ की आधुनिकता पर बोलते हुए वैष्णव ने बताया कि अब सभी अधिकारियों और फील्ड स्टाफ को जल्द ही बहुत उच्च आवृत्ति (वीएचएफ) वॉकी-टॉकी सेट दिए जाएंगे। उन्होंने कहा, 'आरपीएफ के डीजी ने कुछ दिन पहले इसकी मांग की थी। अब रेलवे बोर्ड के चेयरमैन से मंजूरी के बाद आरपीएफ जितने चाहे उतने वीएचएफ सेट खरीद सकेगा।' अश्विनी वैष्णव ने कहा, 'पिछले 50-60 वर्षों तक रेलवे को नजरअंदाज किया गया। अब रेलवे पूरी तरह से बदल रहा है। देश में रेलवे नेटवर्क को पहले से कहीं ज्यादा मजबूत और आधुनिक बनाया जा रहा है, ताकि आम आदमी को बेहतर सेवा मिल सके।'

प्रदेश में चलाया गया दुग्ध समृद्धि सम्पर्क अभियान गोवर्धन पर्व सांस्कृतिक परम्पराओं के अनुरूप मनाया जाएगा

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि गो-माता और गो-पालन का हमारी सनातन संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान है। जो गो-पालन करता है वह गोपाल है और जहां गो-पालन होता है वह घर गोकुल है। गो-संरक्षण एवं संवर्धन सरकार की उच्च प्राथमिकता है, जिसके लिए सरकार समाज के सहयोग से निरंतर कार्य कर रही है। मध्यप्रदेश में दुग्ध उत्पादन को बढ़ाकर पशुपालक किसानों की आय को दोगुना किया जाएगा। मध्यप्रदेश अपनी प्राकृतिक संपदा के साथ गो-वंश से समृद्ध राज्य है। देश के दुग्ध उत्पादन का लगभग 9प्रतिशत मध्यप्रदेश में होता है। हमारी सरकार का लक्ष्य है इसे 20 प्रतिशत तक ले जाना। इसके लिए प्रदेश के गांव-गांव में दुग्ध समृद्धि? संपर्क चलाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत पशु चिकित्सक घर-घर जाकर पशुपालकों को दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के विभिन्न आधुनिक तरीकों, पशुओं में नस्ल सुधार, पशु स्वास्थ्य एवं पशु पोषण आदि के संबंध में जानकारी दे रहे हैं। प्रदेश में वर्ष 2024-25 को गो-संरक्षण एवं संवर्धन वर्ष के रूप में मनाया गया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में 21 अक्टूबर को गोवर्धन पर्व लोक अनुष्ठान और सांस्कृतिक परंपराओं के अनुसार मनाया जाए। आयोजन में गौशालाओं तथा पशुपालकों को विशेष रूप से सहभागी बनाया जाए। साथ ही गोवर्धन पर्व पर पशुपालन तथा दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में विशेष उपलब्धियां दर्ज करने और नवाचार करने वाले उद्यमियों को सम्मानित भी किया जाएगा। प्रदेश की गौ-शालाओं में गोवर्धन पर्व का सामुदायिक आयोजन होगा। गोवर्धन पर्व का मुख्य आयोजन रवीन्द्र भवन भोपाल में किया जाएगा, जिसमें गोवर्धन पूजन, परिक्रमा, अन्नकूट भोग मुख्य होगा। इस अवसर पर पशुचारक समुदायों की कला, बरेदी और ठाट्या नृत्य आदि का प्रस्तुतीकरण होगा। कार्यक्रम में जैविक उत्पादक, दुग्ध उत्पाद, गोबर आधारित शिल्प के स्टॉल लगाए जाएंगे, साथ ही पशुपालन, कृषि, सहकारिता विभाग की योजनाओं की जानकारी देने के लिए विशेष व्यवस्था होगी। इसके साथ ही ग्रामीण आजीविका के लिए दुग्ध उत्पादन और वृंदावन ग्राम योजना के विस्तार के लिए भी गतिविधियों का संचालन होगा। गोवर्धन पर्व पर सभी जिलों में गतिविधियां संचालित की जाएंगी। आंगनवाड़ी केंद्रों में पंचगव्य उत्पाद जैसे घी, दूध, पनीर और दही से बनी सामग्री का वितरण किया जाएगा। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती 2 अक्टूबर से पूरे प्रदेश में दुग्ध समृद्धि संपर्क अभियान चलाया गया। अभियान के अंतर्गत गांव गांव में घर-घर जाकर पशुपालकों को पशुओं में नस्ल सुधार, कृत्रिम गर्भाधान, पशुओं के टीकाकरण, उनकी स्वास्थ्य रक्षा, संतुलित पशु आहार, पशु पोषण आदि के बारे में तकनीकी और व्यावहारिक जानकारी दी गई। पशुपालकों को उपलब्ध संसाधनों में कम खर्च पर अधिक दूध उत्पादन करने और ज्यादा लाभ कमाने के बारे में जागरूक किया गया। अभियान के प्रथम चरण के अंतर्गत विभाग के अधिकारीङ्ककर्मचारियों द्वारा 10 या अधिक गौवंशङ्कभैंस वंश पालने वाले पशुपालकों से संवाद करने के लक्ष्य अनुसार समस्त जिलों में तीन लाख 70 हजार से अधिक पशुपालकों से उनके घर पहुंचकर भेंट की और उन्हें पशुपालन के संबंध में जानकारी दी, साथ ही उनकी समस्याओं का निराकरण भी किया।

अभियान के दौरान मुख्य फोकस पशुओं के दुग्ध उत्पादन को बढ़ाकर पशुपालकों की आमदनी बढ़ाने पर रहा. अभियान के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में मंत्रीगण, सांसद, विधायक, अन्य जनप्रतिनिधि, संभागीय आयुक्त, जिलों के कलेक्टर, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी एवं अन्य अधिकारियों और समाज के गणमान्य व्यक्तियों द्वारा भी विभिन्न स्थानों पर पशुपालकों से भेंट की गई और उन्हें दूध उत्पादन और पशुपालन से ज्यादा लाभ उठाने के बारे में आवश्यक जानकारी प्रदान की गई एवं पशुपालकों के अनुभव भी साझा किए गए। किसानों और पशुपालकों ने भी उत्साहपूर्वक इस अभियान में सहभागिता की।

गो-शालाओं की अनुदान राशि में वृद्धि

मध्यप्रदेश शासन गो-पालन, गो-संवर्धन व गो-वंश के बेहतर व्यवस्थापन के लिए कृत संकल्पित है। राज्य शासन ने गो-शालाओं में गो-वंश के आहार आदि के लिए दी जाने वाली अनुदान राशि को 20 रुपये प्रति गो-वंश प्रतिदिन से बढ़ाकर 40रुपये प्रति गो-वंश प्रतिदिन कर दिया है। गो-शालाओं में उपलब्ध गो-वंश के भरण-पोषण के लिए 2 वर्ष पहले तक 90 करोड़ रूपये का बजट था, जिसे पिछले वर्ष बढ़ा कर 250 करोड रूपये किया गया। वित्त वर्ष 2025-26 में इस राशि को बढ़ा कर 600 करोड़ रूपये कर दिया गया है। गो-वंश के व्यवस्थापन के लिए डीबीटी के माध्यम से अनुदान की राशि सीधे गो-शालाओं के बैंक खातों में अंतरित की जा रही है। प्रत्येक माह लगभग 50 करोड़ रूपये की राशि गो-शालाओं को अंतरित की जा रही है।

1000 से अधिक नवीन गो- शालाएं

वर्तमान में प्रदेश में 2900 गो-शालाएं संचालित है, जिनमें लगभग 4 लाख 25 हजार गो-वंश का व्यवस्थापन किया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्र में मुख्यमंत्री गो-सेवा योजना के अंतर्गत 2203 गो-शालाएं निर्मित कर संचालित की जा रही हैं, जिनमें 2 लाख 11हजार गो-वंश का व्यवस्थापन किया जा रहा है। विगत एक वर्ष में 1000 से अधिक नवीन गो-शालाएं प्रारंभ की गई हैं, जिनमें एक लाख से अधिक गो-वंश का व्यवस्थापन किया जा रहा है। नगरीय क्षेत्रों में उपलब्ध गो-वंश के आश्रय एवं भरण-पोषण के लिए नगर पालिक निगम ग्वालियर, उज्जैन औरइंदौर में वृहद गौशालाएं खोली गई हैं। भोपाल में 69.18 एकड़ भूमि पर 10,000 गौवंश क्षमता की वृहद गो-शाला का निर्माण कार्य किया जा रहा है, जिसकी कुल लागत लगभग 45करोड़ रूपये है। इसे आगामी एक वर्ष में पूर्ण करने का लक्ष्य है। गो-अभ्यारण्य अनुसंधान एवं उत्पादन केन्द्र, सालरिया, जिला आगर-मालवा में वर्तमान में 6500गो-वंश का व्यवस्थापन किया जा रहा है। गो-शालाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में प्रदेश सरकार ने अनूठी पहल की है। प्रदेश में स्वावलंबी गो-शालाओं (गोकुल धाम) की स्थापना की नीति-2025 लागू की गई है, जिसमें न्यूनतम 5000 गौवंश के व्यवस्थापन के लिए राज्य सरकार द्वारा 130 एकड़ तक भूमि गो-शालाओं को उपयोग के लिए दिए जाने को प्रावधान है। इसमें से 5 एकड़ भूमि व्यावसायिक गतिविधियों के लिए दी जाएगा। मध्यप्रदेश ऐसा करने वाला देश का पहला राज्य है। स्वाबलंबी गो-शालाओं के लिए प्रदेश के 18 जिलों में 4235 एकड़ भूमि आवंटित हो चुकी है और 13 जिलों मंदसौर, जबलपुर, रायसेन, दमोह, सागर, पन्ना, विदिशा, सतना, अशोकनगर, छतरपुर, रतलाम, शाजापुर औरभिण्ड में इस कार्य के लिए निविदाएं भी जारी की जा चुकी हैं।

दो साल में तीन नए टाइगर रिजर्व बने, संरक्षण प्लान नहीं बनने से रुका फंड

भोपाल. प्रदेश के तीन नए टाइगर रिजर्व डॉ. विष्णु वाकणकर, माधव और रानी दुर्गावती टाइगर रिजर्व को अब तक बाघों के संरक्षण की गारंटी नहीं मिली है। कहने को तो इनमें बाघों का संरक्षण हो रहा है लेकिन वास्तव में संरक्षण के लिए जिस बजट की जरुरत होती है वह केंद्र से नहीं मिल रहा है। इसकी बड़ी वजह इन तीनों के लिए बाघ संरक्षण योजना (टीसीपी) तैयार नहीं होना है। ये योजना वन विभाग के जिमेदार अधिकारियों को बनानी थी। यह 10 वर्षीय योजना होती है। जिसमें किसी भी रिजर्व की पूरी कुंडली होती है। उक्त योजना में संबंधित रिजर्व में आगामी 10 वर्षों तक किए जाने वाले कामों और बाघों के संरक्षण को शामिल किया जाता है, जिसमें संभावित लागत का जिक्त्रस् होता है। राष्ट्रीय बाघ प्राधिकरण इसकी जांच करता है, जिसके बाद मंजूरी देता है। किसी भी रिजर्व के लिए केंद्र से आर्थिक मदद लेने का यह सबसे बड़ा माध्यम होता है।

रानी दुर्गावती टाइगर रिजर्व्र घोषणा दिसंबर 2023 में हो चुकी है। उस समय यह प्रदेश का 7वां और देश का 54वां टाइगर रिजर्व बना था। इसकी सीमा सागर, दमोह और नरसिंहपुर तक 2,339 वर्ग किलोमीटर में फैली है। यह नौरादेही और दुर्गावती वन्यजीव अभयारण्यों को मिलाकर बनाया है। इसमें बाघों के संरक्षण की अपार संभावनाएं है। रातापानी वन्यजीव अभयारण्य् को दिसंबर 2024 में रिजर्व घोषित किया। बाद में इसका नाम डॉ. विष्णु वाकणकर टाइगर रिजर्व रखा गया। केंद्र ने 2008 में ही इसे रिजर्व बनाने की सैद्धांतिक सहमति दे दी थी। इसका कोर क्षेत्र 763.812 वर्ग किमी और बफर 507.653 वर्ग किमी है। यहां बाघों की संया 80 से 100 के बीच है। मार्च में माधव नेशनल पार्क को बनाया रिजर्व्र 7 महीने पहले मार्च 2025 में माधव नेशनल पार्क को टाइगर रिजर्व घोषित किया गया। इसका विस्तार क्षेत्र शिवपुरी है, जो कुल 37 हजार 523.344 हेक्टेयर में फैला है। अभी इसमें 3 वयस्क और 2 शावक बाघ है। भोपाल के बाद यह दूसरा रिजर्व होगा, जिसकी सीमा शहर से सटी है। शिवपुरी, कूनो देश के बड़े वाइल्डलाइफ टूरिज्म सर्किट बनने की ओर अग्रसर है। वैसे तो सभी 9 रिजर्वों में बाघों की संया बढ़ रही है। उस हिसाब से इन्हें संरक्षण व निगरानी के लिए बजट नहीं मिल रहा है लेकिन इन तीनों नए रिजर्वों की टीसीपी नहीं होने के कारण और ज्यादा दिक्कतें आ रही हैं। आमतौर पर टीसीपी के जरिए कामों को दिखाकर राशि की मांग की जा सकती है, लेकिन यह भी करना संभव नहीं हो पा रहा है। हालांकि राज्य के मद से राशि जारी कर काम हो रहे हैं लेकिन वे जरुरतों को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। वन विभाग की वन्यप्राणी शाखा के अधिकारियों का कहना है कि टीसीपी बनाने के काम प्रगति पर है, इसे जल्द पूरा किया जाएगा। कुछ जरुरतें बाकी हैं, उन पर काम कराया जा रहा है। चूंकि जब भी टीसीपी बनाई जाती है तब कई पैरामीटर को देखना पड़ता है। अमले की भी कमी= तीनों रिजर्वों को अमले की जरुरत है। इनमें अधिकारी, कर्मचारी दोनों शामिल हैं। इसकी भरपाई भी होगी, इनमें से प्रत्येक के लिए स्वीकृत पदों और वर्तमान जरुरतों की समीक्षा हो। इसे भी टीसीपी में दर्शाना होगा। उस आधार पर प्रक्रिया के तहत मांग पत्र जाएगा।

एफएओ की रिपोर्ट- हर साल कट जाते हैं 1 करोड़ हेक्टेयर में फैले जंगल

नई दिल्ली संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) की ग्लोबल फॉरेस्ट रिसोर्सेज असेसमेंट 2025 (एफआरए 2025) रिपोर्ट में कहा गया है कि पिछले एक दशक में दुनिया के सभी क्षेत्रों में वनों की कटाई की रफ्तार धीमी हुई है।

यह रिपोर्ट हर पाँच वर्ष में जारी की जाती है। इसका 2025 का संस्करण 21 अक्टूबर 2025 को इंडोनेशिया के बाली में आयोजित ग्लोबल फॉरेस्ट ऑब्ज़र्वेशंस इनिशिएटिव प्लेनरी के दौरान प्रकाशित किया गया। ताजा आंकड़ों के मुताबिक, वर्तमान में पृथ्वी की कुल भूमि का लगभग एक-तिहाई हिस्सा — यानी करीब 4.14 अरब हेक्टेयर में जंगल हैं। एफआरए 2025 रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि जंगलों के संबंध में कुछ और सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं, जैसे- अब आधे से अधिक वनों के लिए दीर्घकालिक प्रबंधन योजनाएं लागू हैं और लगभग पांचवें हिस्से के वन अब कानूनी रूप से स्थापित संरक्षित क्षेत्रों में आते हैं। हालांकि, रिपोर्ट में यह भी चेतावनी दी गई है कि विश्वभर का वन पारिस्थितिकी तंत्र अभी भी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। वर्तमान में वनों की कटाई की दर 10.9 मिलियन (1.09 करोड़) हेक्टेयर प्रति वर्ष है, जो अब भी चिंताजनक रूप से अधिक है। खाद्य सुरक्षा, स्थानीय आजीविका और नवीकरणीय जैविक पदार्थों तथा ऊर्जा के स्रोत के रूप में जंगल अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यहां विश्व की जैव विविधता का एक बड़ा हिस्सा रहता हैं। जंगल वैश्विक कार्बन और जल चक्र को नियंत्रित करने में मदद करते हैं। और सूखा, मरुस्थलीकरण, बंजरपन, भूस्खलन तथा बाढ़ जैसे खतरों और उनके प्रभावों को कम करने में योगदान देते हैं। एफएओ के महानिदेशक क्यू डोंगयू ने एफआरए 2025 की भूमिका में लिखा है- एफआरए पूरी दुनिया के वनों की स्थिति, उनके संसाधनों, प्रबंधन और उपयोग का सबसे बड़ा और भरोसेमंद आकलन है। यह रिपोर्ट बताती है कि दुनिया में कितने वन हैं, उनकी हालत कैसी है, उनका इस्तेमाल कैसे हो रहा है और उन्हें कैसे संभाला जा रहा है। साधारण शब्दों में कहें तो यह रिपोर्ट वनों से जुड़ी हर जरूरी जानकारी एक जगह इकट्ठी करती है, ताकि सरकारें और समाज बेहतर फैसले ले सकें और वनों का टिकाऊ (सतत) तरीके से संरक्षण कर सकें।

वन क्षेत्रफल-

दुनिया में कुल 4.14 अरब हेक्टेयर भूमि वन क्षेत्र के अंतर्गत आती है, जो पृथ्वी के कुल भूभाग का 32 प्रतिशत है। यह प्रति व्यक्ति औसतन 0.5 हेक्टेयर वन क्षेत्र के बराबर है। विश्व के लगभग आधे वन उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में स्थित हैं।

शुद्ध हानि में कमी

वन क्षेत्र की वार्षिक शुद्ध हानि 1990 के दशक में 10.7 मिलियन हेक्टेयर प्रति वर्ष थी, जो 2015ङ्क2025 की अवधि में घटकर 4.12 मिलियन हेक्टेयर प्रति वर्ष रह गई है।

वन कटाई और विस्तार-

वनों की कटाई की दर 1990ङ्क2000 के दौरान 17.6 मिलियन हेक्टेयर प्रति वर्ष से घटकर 2015-2025 में 10.9 मिलियन हेक्टेयर प्रति वर्ष हो गई है। हालांकि, इसी अवधि में वनों के विस्तार की दर भी घटी है। 2000 से 2015 के दौरान यह 9.88 मिलियन हेक्टेयर प्रति वर्ष थी, जो 2015 से 2025 में घटकर 6.78 मिलियन हेक्टेयर प्रति वर्ष रह गई।

प्राकृतिक रूप से पुनर्जीवित वन-

ये कुल वन क्षेत्र के 92 प्रतिशत (3.83 अरब हेक्टेयर) हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं। 1990 से 2025 के बीच ऐसे वनों में 324 मिलियन हेक्टेयर की कमी आई है, लेकिन शुद्ध हानि की दर अब काफी धीमी हो गई है। पिछले दशक में प्राकृतिक रूप से पुनर्जीवित वनों में सबसे अधिक गिरावट अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका में दर्ज की गई है, जबकि यूरोप में ऐसे वनों में वृद्धि हुई है।

प्राथमिक या मूल वनों का क्षेत्रफल कम से कम 1.18 अरब हेक्टेयर है — यह दुनिया के कुल रिपोर्ट किए गए वन क्षेत्र का लगभग एक-तिहाई हिस्सा है। हालाँकि इन वनों का नुकसान जारी है, लेकिन 2000 के शुरुआती वर्षों की तुलना में इसकी दर अब आधी रह गई है। रोपित या कृत्रिम रूप से उगाए गए वन कुल वन क्षेत्र के लगभग 8 प्रतिशत हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनका कुल क्षेत्रफल अनुमानत: 312 मिलियन हेक्टेयर है। 1990 के बाद से इन वनों का विस्तार सभी क्षेत्रों में हुआ है, लेकिन पिछले दशक में इसकी वृद्धि की गति धीमी पड़ी है।

पृजैव-पदार्थ और कार्बन-

विश्व के वनों में मौजूद कुल वृद्धि योग्य लकड़ी का अनुमान लगभग 630 अरब घन मीटर लगाया गया है। वनों में कार्बन भंडार में भी वृद्धि हुई है, जो अब 714 गीगाटन तक पहुंच गया है।

संरक्षित क्षेत्र-

विश्व के लगभग 20 प्रतिशत वन (813 मिलियन हेक्टेयर) अब कानूनी रूप से स्थापित संरक्षित क्षेत्रों में आते हैं।

1990 से अब तक यह क्षेत्र 251 मिलियन हेक्टेयर बढ़ा है।

प्रबंधन योजनाएं-

दुनिया भर के आधे से अधिक वन, लगभग 2.13 अरब हेक्टेयर (कुल वन क्षेत्र का 55 प्रतिशत) अब प्रबंधन योजनाओं के अंतर्गत आते हैं।

1990 के बाद से यह क्षेत्र 365 मिलियन हेक्टेयर बढ़ा है।

सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले 4.90 लाख बच्चों को निशुल्क साइकिल

स्कूल शिक्षा विभाग ने इस वर्ष किया 215 करोड़ बजट का प्रावधान

भोपाल प्रदेश के सरकारी स्कूलों में बच्चों के नामांकन दर और शिक्षा गुणवत्ता सुधार के उद्देश्य से स्कूल शिक्षा विभाग की निःशुल्क साइकिल वितरण योजना में इस शैक्षणिक सत्र में 4 लाख 90 हजार बच्चों को साइकिल का वितरण किया गया है। इस वर्ष विभाग ने योजना के लिये 215 करोड़ रूपये के बजट का प्रावधान किया है। योजना के माध्यम से उन बच्चों को निःशुल्क साइकिल का लाभ दिया जा रहा है, जिन्होंने कक्षा-5 और कक्षा-8 उत्तीर्ण कर ली है। ऐसे विद्यार्थियों के अगली कक्षा की दूरी मजरे टोले की दूरी 2 किलोमीटर या उसे अधिक की दूरी पर हो उन्हीं बच्चों को इस योजना का लाभ दिया जा रहा है। इस योजना में उन बालिकाओं को भी योजना का लाभ दिया जा रहा है जो छात्रावास में रहकर अध्ययन कर रही है। बच्चों को साइकिल की सुविधा स्कूल आने-जाने के लिये प्रदान की गई है। पिछले वर्ष विभाग ने 4 लाख 80 हजार बच्चों को निःशुल्क साइकिल वितरित की थी। लोक शिक्षण संचालनालय ने साइकिल खरीदी की प्रक्रिया जेम पोर्टल के माध्यम से लघु उद्योग निगम की सहयोग से पूरी की है। बच्चों को साइकिल वितरण के लिये संचालनालय में विस्तृत दिशा निर्देश भी जारी किये थे। कक्षा-6 के बच्चों को 18 इंच और कक्षा-9 के विद्यार्थियों को 20 इंच की साइकिल प्रदाय की गई है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008